Special Issue January 2020

VIDYAWARTA®

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

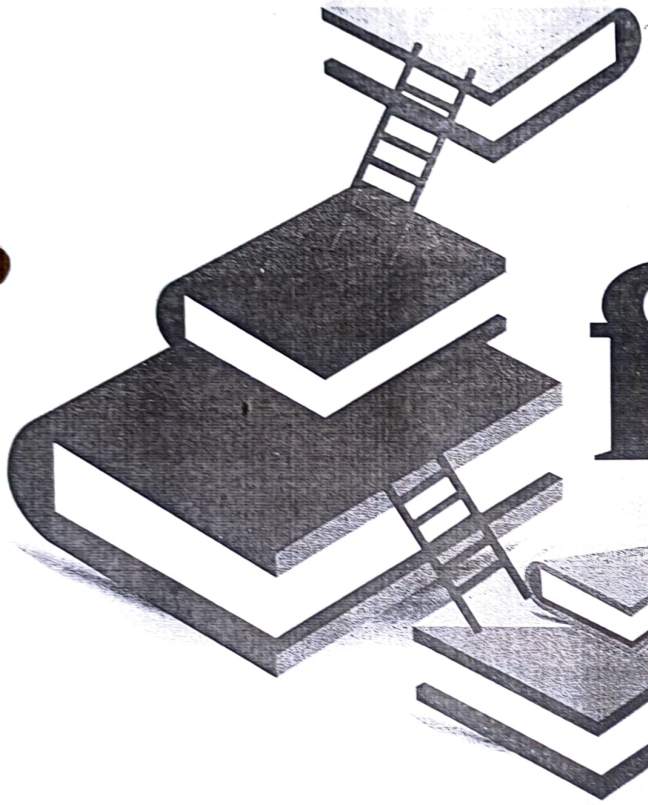

साहित्य और समाज चिंतन

संपादक
प्रा.नवनाथ जगताप

सहसंपादक
डॉ.अनिल कांबळे

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

श्री विद्या विकास मंडल संचलित

श्री संत दामाजी महाविद्यालय, मंगलवेढा

(हिंदी विभाग)

एवं पुण्यश्लोक अहिल्यादेवी होलकर सोलापुर विश्वविद्यालय, सोलापुर

के संयुक्त तत्त्वावधान में

एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्टी

"साहित्य, समाज और संस्कृति"

खंड १ - साहित्य और समाज चिंतन

❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. न्यायक्षेत्र:बीड

"Printed by: Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. Published by Ghodke Archana Rajendra & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor Dr. Gholap Bapu Ganpat.

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

60) डॉ शरदसिंह के उपन्यास 'पिछले पन्ने की औरतें' में स्त्री विमर्श
भावनादेवी, जम्मू ||164

61) वृद्धों के दुनिया की संवेदनशील अभिव्यक्ति: समय सरगम
डॉ.मालोजी अर्जुन जगताप, सांगोला ||166

62) 'पाँव तले की दूब' उपन्यास में चित्रित आदिवासी समस्याएँ
नीरा देवी, जम्मू ||169

63) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर और दलित साहित्य की संवेदना
डॉ. औदुंबर जाधव, जि.सोलापुर (मंगलवेढ़ा) ||171

64) डॉ. भीमराव आंबेडकर : दलितों के प्रेरणास्त्रोत
डॉ. दत्तात्रय गायकवाड, सोलापुर (मंगलवेढ़ा) ||172

65) हिंदी नाटक साहित्य में बदलते स्त्री रूपों का चित्रण
प्रा. रामहरि काकडे, बीड़ ||175

www.vidyawarta.com/03 | http://www.primingarea.blogspot.com

MAH MUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318 | Vidyawarta® Peer-Reviewed International Publication | January 2020 Special Issue-01 | 0175

आक्रोश में जाकर यदि एन आर सागर जैसा कवि कहता है कि, "मैं लगा दूँगा अब आग इस देश में" तो इसका संकेत भी व्यवस्था-परिवर्तन को ओर होता है न कि राष्ट्र-विरोधी की ओर कुलमिलाकर दलित साहित्य का स्वर सामाजिक न्याय का स्वर है उसका तेवर चाहे कितना ही तीखा या विरोधी हो किन्तु उसकी दृष्टि रचनात्मक है। इसलिए वह ध्वंस भी करता है तो नव-निर्माण के लिए कुरेदता भी है तो रचनात्मकता के बीज ढूँढने के लिए। और कहने की आवश्यकता नही है कि दलित साहित्य की यह रचनात्मकता निसंदेह अम्बेडकरवाद के विचार और दर्शन के प्रभाव का परिणाम है जिसे संक्षेप में ताराचन्द खाण्डेकर (दलित साहित्य की वैचारिक पृष्ठभूमि) के शब्दों में कहा जाता है कि "एक व्यक्ति एक मूल्य को मानकर स्वतंत्रता समता और भ्रातृत्व अर्थात सामाजिक नैतिकता को स्वीकार करते हुए व्यक्ति का स्वांगपूर्ण कल्याण साधने का संसदीय जनतंन्त्रात्मक जीवनमार्ग अम्बेडकरवाद है। "अत: दलित साहित्य के सही प्रेरणा स्त्रोत डॉ.भीमराव आंबेडकर माने जाते हैं।

संदर्भ :-

१. इक्कीसवीं सदी में दलित आन्दोलन-डॉ.जयप्रकाश कर्दम (साहित्य एवं समाज चिन्तन)

२. दलित विमर्श-डॉ.नरसिंहदास बनकर

३. दलित साहित्याचे नामांतर-आंबेडकरवादी साहित्य-डॉ.यशवंत मनोहर

❑❑❑

65

हिंदी नाटक साहित्य में बदलते स्त्री रूपों का चित्रण

प्रा. रामहरि काकडे
सहायक प्राध्यापक एवं विभाग अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
कला एवं विज्ञान महाविद्यालय,
शिवाजी नगर गढ़ी, तहसील ल गेवराई, जिला - बीड

****

साहित्य और समाज का बिंब प्रतिबिंब संबंध रहा है। अगर किसी समय के समाज का अध्ययन करना हो तो उस काल का साहित्य महत्वपूर्ण है। क्योंकि आचार्य रामचंद्र शुक्लल साहित्य जनता की चित्तवृत्तियों का विकास मानते हैं। वर्तमान युग मानवतावादी युग है विश्व की अधिकांश राष्ट्रों में प्रजातांत्रिक शासन प्रणालिया कार्यरत है। ऐसे परिवेश में समाज के दलित शोषित लोगों में अपनी स्वतंत्रता के प्रति जागृति हुई है। जिसके परिणाम स्वरुप साहित्य में उनके परिवर्तित रूपों का चित्रण होने लगा है।। इस संदर्भ में हिंदी नाटक साहित्य में बदलते स्त्री रूपों का चित्रण करना अत्यंत रोचक हो सकता है। साहित्य और समाज का अभिन्न संबंध है सामाजिक आंदोलनों का पूर्ण प्रतिबिंब साहित्य में दृष्टिगत होता है। नारी जागरण का आंदोलन २० वी सदी का महत्वपूर्ण आंदोलन रहा है। जिसके परिणाम स्वरूप स्त्री के विचार विश्व में मौलिक परिवर्तन आ गया है। धार्मिक श्रृंखलाओं को तोड़कर नारी मुक्त स्वास्थ्य ले रही है। उसके इस परिवर्तित रूपों का चित्रण अन्य बिधाओं के समान नाट्य विधा में भी हुआ है।।

नाट्यविधा का प्रारंभ सही अर्थों में भारतेंदु युग से ही माना जाता है। इसस युग के अधिकांश नाटककार नारी का चित्रण आदर्शवादी भारतीय नारी के रूप में करते हैं। इस युग में स्त्री का चित्रण स्त्री समस्याओं को केंद्र में रखकर हुआ है। जैसे प्रेम और विवाह, अवैध संतति की समस्या आदि। भारतेंदु के नाटक 'सत्य हरिश्चंद्र' की शैव्या, 'चंद्रावली' की चंद्रावली, 'सतीप्रताप' की सावित्री स्त्री पात्रों को पारंपरिक भारतीय स्त्री के रूप में चित्रित किया है। 'निलदेवी' की निलदेवी इसे अपवाद है क्योंकि इस नाटक में महारानी निलदेवी की अपूर्व विरता एवं साहस का चित्रण कर

उसके क्षत्राणी रूप को उजागर किया है। जो आज भी प्रासंगिक है। "हिंदी के महान और महत्वपूर्ण नाटककार जयशंकर प्रसाद के नाटकों में नारी के दो रूप दिखाई देते है। पहला जिसमें वह सुंदरता, त्याग, दया, क्षमा, शील और समर्पण की प्रतिमूर्ति है और अपने इन्हीं गुणों से वह पुरुष को जीतती है। दूसरा जिसमें वह महत्वाकांक्षा अहंकार काम कुंठा और अधिकार लालसा के कारण कुकृत्य करती है।"[१] उनके अंतिम नाटक ध्रुवस्वामिनी में नायिका ध्रुवस्वामिनी को आत्माभीमानी, आत्मनिर्भर आधुनिक नारी के रूप में चित्रित किया है। तभी तो वह स्वयं को उपहार में देने की प्रवृत्ति का विरोध करती है।।

आजादी के बाद स्त्री के सामाजिक राजनीतिक जीवन में काफी बदलाव आया। धर्मवीर भारती का नाटक 'अंधा युग' की गांधारी भगवान श्रीकृष्ण को चुनौती देती है। भारतेंदु युग से लेकर सन १९ - ७० तक तो स्त्री रूपों में इतना बदलाव दृष्टिगत नहीं होता। मोहन राकेश का अंतिम नाटक 'आधे - अधूरे' में सावित्री का चित्रण परंपरा से हटकर है। सावित्री स्त्री पारंपरिक छवि को तोड़कर एक साथ घर - परिवार एवं ऑफिस ही नहीं संभालती तो मुक्त प्रेम संबंध भी बनाती है। 'आधे - अधूरे' के बाद एक से बढ़कर एक स्त्री पात्रों का सृजन होने लगा। अब तक स्त्री की वैवाहिक, पारिवारिक, आर्थिक एवं सामाजिक बातों का ही चित्रण हो रहा था। लेकिन अब स्त्री की लैंगिकता को लेकर खुलेपन से चर्चा होने लगी। स्त्री अपनी आवश्यकता पूर्ति के लिए पारंपरिक मान्यताओं को कसौटी पर परखने लगी। उसका यह कहना था कि जो बातें स्त्री के ऊपर प्रतिबंध लगाती है वही बातें पुरुष को मुक्त कैसे रख सकती है। सुरेंद्र वर्मा का नाटक 'द्रोपदी' में सुरेखा अपने पति के विभाजित व्यक्तित्व को लेकर त्रस्त है। वही अपनी बेटी अलका से उसके प्रेम संबंधों पर निसंकोच बातें भी करती है। उन्हीं का नाटक 'सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक' की नायिका शीलवती का चित्रण एक कदम आगे बढ़ता है। "यहां भारतीय नारी के दोनों रूप एक्का साथ मौजूद है। एकनिष्ठ पतिव्रता पत्नी की तरह शीलवती अपने पति ओक्काक से उसकी नपुंसकता और अपनी अतृप्ति के बावजूद अनन्य भाव से उसी को चाहती है। परंतु राज्य का उत्तराधिकारी पाने के लिए सत्ता नियोग द्वारा उसे पर पुरुष का वरण करने के लिए बाध्य करती है - तो नियम, नैतिकता और मर्यादा जैसे खोखले बंधनों की गांठ खोलकर वह पूरी तरह से उन्मुक्त हो जाती है। वह मातृत्व के बजाय पुरुष के संयोग से प्राप्त होने वाले अपूर्व सुख को ही नारी - देह की एकमात्र सार्थकता मानती है।"[२] वही मौजूदा हालात को देखते हुए योग के लिए अपने बाल सखा आर्य प्रताप को चुनती है। उसके अंतरंग संबंधों के उपरांत उसमें आमूलचूल परिवर्तन आता है तथा वह पाश्चात्य भूतल के लैंगिक संबंधों को स्वीकार करती दृष्टिगत होती है।।

हमीदुल्ला का नाटक 'दरिंदे' रति की विवाह संस्था में न विश्वास रखते हुए उन्मुक्त जीवन जीने का समर्थन करती है। "शादी, डैम विद दिस शादी बिजनेस। क्यों बधें हम, जब वैसे ही हम एक - दूसरे को आसानी से पा सकते है।"[३] रमेश बक्षी का नाटक 'देवयानी का कहना है' नाटक की देवयानी भी विवाह संस्था में विश्वास न रखकर उन्मुक्त सेक्स चाहती है। वह पारंपारिक रुढी - प्रथा को पूर्णत: नकारती है। वह अन्य पुरुषों के साथ संबंध रखकर अपने प्रेमी से भी एक पत्नीव्रत की उम्मीद नहीं रखती। विवाह के विषय में उसका कथन है, "अविवाहित बिस्तर - बाजी में खर्च अधिक, डर जाता है। विवाह का सर्टिफिकेट मिल जाए तो नपे - तुले खर्च में सुबह से रात तक के सब काम हो जाते हैं।"[४] मृदूला गर्ग का नाटक 'एक और अजनबी' में शानी, प्रशांत की पत्नी और देवयानी तीनों स्त्री पात्र स्वच्छंद यौन संबंधों में विश्वास रखते हैं। विवाह व्यवस्था उन्हें अमान्य है। इसलिए तो अपने पति के कहने पर प्रमोशन के लिए शांति पति के बॉस के साथ संबंध रखती है। तो प्रशांत की पत्नी भी विवाह बाह्य संबंध बनाती है। तिसरी स्त्री पात्र शीलवती अपने यौन सुख के लिए नियोग के चुनाव द्वारा ऊपपति के साथ योन चख लेती है। नियोग का उपयोग व स्वयं की सचखप्राप्ति के लिए करती है। सुशील कुमार सिंह का नाटक 'चार-चार यारों की यार' की बिंदिया अपने पति को छोड़कर दूसरे से विवाह करती है। लेकिन जब दूसरा पति उसे शारीरिक सुख नहीं दे पाता तो वह अपने तीन मित्रों के साथ संबंध बनाती है। बिंदिया सेक्चुअल अर्ज से पीड़ित है। वह सभ्य समाज की सारी मर्यादाओं को तोड़कर एक वेश्या सा वर्तन करती है। "मुझे कोई एतराज नहीं --- आगे बढ़ो और कस लो मुझे अपनी बाहों में --- तुम्हें जरूरत है एक औरत की और मुझे जरूरत है एक मर्द की।"[५] ऐसी विद्रोही स्त्री पात्रों ने सामाजिक पारिवारिक मूल्यों को पूर्णत: अस्वीकार कर मुक्त जीवन को स्वीकार किया है। "स्त्री का यह परम विद्रोही तेवर एक अतिवाद से हटकर दूसरे अतिवाद को पकड़ने जैसा है। सदियों के दमन, अत्याचार और शोषण का बदला लेनेवाली यह नई औरत मर्यादा, मूल्य, नैतिकता और व्यवस्था को मानो जड़ से उखाड़ फेंकना चाहती है। इसमें न्याय - सम्मत समान अधिकारों पर खड़े घर - परिवार या स्त्री पुरुष के बीच संतुलित संबंधों की अपेक्षित तलाश की कोई आकांक्षा नहीं

है।"[५]

हिंदी नाटकों में स्त्री चरित्र निरंतर बदलते रहे है। आदर्श गृहणी, पत्नी से लेकर परिवार एवं विवाह संस्था को नकार कर मुक्त सेक्स का स्वीकार करने वाली नारी तक का यह चित्र केवल नकारात्मक न होकर सकारात्मक भी है। 'युगे - युगे क्रांत' की रामकली, कलावती, शारदा और सुरेखा स्वस्थ आधुनिक विचारों वाले नारी पात्र है। इसमें रामकली पर्दा प्रथा का विरोध करती है। विधवा कलावती प्यारेलाल से पुनर्विवाह करती है तो शारदा नारी शिक्षा और नारी स्वतंत्रता की बात करती है। इतना ही नहीं तो सुरेखा अपने भाई प्रदीप के अंतरजाति विवाह का समर्थन करती हुई कहती है, "क्रांति के बिना समाज में परिवर्तन नही होता। आप लोगों ने भी तो एक दिन ऐसा साहस किया था। --- मनुष्य - मनुष्य है। धर्म, मत और जाति बदल जाने से वह नहीं बदल जाता।"[७] विष्णु प्रभाकर का नाटक 'डॉक्टर' की डॉ. अनिला अपने पति द्वारा छोड़े जाने पर मधुलक्ष्मी से डॉ. अनिला बनती है। जब उसके पूर्व पति की मरणासन्न पत्नी को ऑपरेशन करने के लिए डॉ. अनीता के सामने लाया जाता है तब उसमें प्रतिशोध भावना और कर्तव्य भावना का संघर्ष निर्माण होता है। लेकिन अंत में कर्तव्य भावना की विजय दिखाकर नाटककार ने परित्यक्ता नारी से डॉक्टर नारी तक का प्रवास एवं उसमें कर्तव्य निष्ठा का विजय दिखाकर वर्तमान नारी रूपों का चित्रण किया है। हमीदुल्ला का नाटक ख्याल भारमली' की भारमली भी अपने ऊपर हुए अन्याय का विरोध करती है। वह दासी है तथा राजा मालदेव उसे भोगता तो है, लेकिन उसके पुत्र को अपना अधिकार नहीं देना चाहता। इस प्रकार उच्च कुल के लोगों द्वारा निम्न कुल के लोगों पर किए जाने वाले अन्याय और अत्याचार का विरोध वह करती है। "स्त्री पुरुष के अनैतिक संबंधों एवं समकालीन मूल्य परिवर्तन के इस दौर में भारमाली मात्र भोग्य बन कर नहीं जीना चाहती।"[८] विनोद रस्तोगी का नाटक 'नया हाथ' की शालिनी भी आधुनिक समर्थ एवं स्वतंत्र विचारों वाली नारी वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है। वह समझती है कि अब औरत को पुरुषों पर निर्भर रहने की आवश्यकता नहीं है। "वह जमाना गया। जब औरत को रोटी के लिए पिता, पति एवं अंत में पुत्र पर निर्भर रहना पड़ता था। आज वह आर्थिक रूप से स्वतंत्र है"[९] नरेंद्र कोहली का नाटक 'नींद आने तक' की अनन्या परंपरागत अपराध बोध से मुक्त होकर निर्णय लेती है। जब अनन्या पर बलात्कार होता है तब उसमें उसका कोई भी दोष ना होकर भी पति उसे ही प्रताड़ित करना चाहता है। तब वह बड़ी निडरता से पति से कहती है, "मेरी सहायता मेरा पाप नहीं है। मैं मरने से इंकार करती हूं। --- तुम चाहो ना खोज कर उन लोगों की हत्या कर दो।"[१०]

हिंदी नाटकों के स्त्री चित्रण में जो बदलाव आया है वह केवल शिक्षित, शहरी या ऊच्च कुलीन स्त्रियों में ही न होकर इससे अनपढ़, ग्रामीण या दलित स्त्रियों का भी अंतर्भाव होता है। लक्ष्मीनारायण लाल का नाटक 'मंगामाटी' की गंगा भले ही ग्रामीण हो पर वह संपूर्ण गांव की स्त्रियों में खुद्दारी और जागरूकता लाती है। वह जाती - पाती का भेद न मान कर मानवता को सर्वोच्च स्थान देती है। निर्भीक एवं स्वतंत्र मानवतावादी विचारों वाली गंगा स्त्री पुरुष समानता में विश्वास रखती है। गांव के सामंतवादी सोच के लोग उसे बदनाम करने का प्रयास करते हैं। लेकिन गंगा हार न मानकर अत्याचार और अंधविश्वास के विरोध में लड़की रहती है। इस लड़ाई में गांव की महिलाएं भी उसके साथ खड़ी हो जाती है। नाटक के अंत में गंगा की लड़ाई को जीत प्राप्त होती है। डॉ.शंकर शेष का नाटक 'पोस्टर' की अनपढ़ चैती गांव के मजदूरों पर हो रहे अन्याय के विरोध में खड़ी होती है। वह मजदूर नेता राघोबा का एक पोस्टर चिपकाकर अन्याय एवं अत्याचारी लोगों को विद्रोह का संकेत देती है। यह पोस्टर देखकर गांव के अत्याचारी लोगों के मन में डर निर्माण होता है और वह मजदूरों का वेतन भी बढ़ा देते हैं। गांव की सारी औरतें भी चैती के साथ खड़ा हो जाती है। यह नाटक नारी मुक्ति के संदर्भ में महत्वपूर्ण है। मृणाल पांडे का नाटक 'मौजूदा हालात' को देखते हुए की बहू भी एक ग्रामीण औरत है वह अपने पति के डरपोक वर्तन का विरोध कर उसमें स्वाभिमान जगाना चाहती है। वह गांव में चल रही गलत परंपराओं का विरोध करती है। वह शिक्षित है तथा घर की खस्ता हालात देखकर अर्थार्जन करना चाहती है। वह पुरुषी मानसिकता के विरोध में घर एवं बाहर एक साथ लडती है। "कितना कुछ कर सकती है यह हम, सिर्फ --- सिर्फ --- अगर एक बार एक बार औरत को उन खाकों की कैद से उबार पाये जो ब्रह्मचारी, शिकारगाह और मर्दाना कमरों की दीवारों पर उन लोगों ने रचे हैं।"[११] सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का नाटक 'बकरी' में ग्रामीण विपती अपनी बकरी के लिए अन्याय एवं अत्याचारी राजनेताओं से लडती है। उसका साहस देखकर गांव की सभी औरतें उसका साथ देती है। परिणाम स्वरूप सभी गांव वाले मिलकर अत्याचारी - अन्यायी राजनेताओं का खात्मा करते हैं। इस प्रकार विपती के माध्यम से एक स्त्री गांव की मुक्ति का कारण बनती है। नाग बोडस का नाटक 'नर - नारी' की गुल्लो एक स्वाभिमानी एवं निडर औरत है। उसका पति उसे छोड़कर चला गया तो भी वह डगमगाती नही। गांव की पुरुषों द्वारा

गंदे इशारे करने पर वह उनको मुंह तोड़ जवाब देती है। गुल्लो का चरित्र इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है कि, वह अपने पति के वापस आने पर उसे अस्वीकार कर दिलावर के साथ गांव छोड़ चली जाती है। इस संदर्भ में उसका कथन महत्वपूर्ण है, "इससे बोलो, तू तो बिना चूसे ही छोड़ भागा हरामी। इससे कहो गुल्लो को छुआ तो खबरदार। --- गुल्लो अब दिलावर की, दिलावर अब गुल्लो के।"[५] उषा गांगुली का नाटक 'रुदाली' की नायिका रुदाली भी एक निम्न वर्गीय स्त्री पात्र होकर नाटक के अंत संघर्षरत है। उसका बेटा मरा, पति मारा तो भी वह डगमगाई नही। अंत में उसे रुदाली का काम भी करना पड़ा लेकिन जीवन संघर्ष में जो भी आया वह उसने स्वीकार किया। राजेश जैन का नाटक 'विषवंश' की नायिका रंदा ऐसी ग्रामीण स्त्री है जो अन्याय एवं अत्याचारी राजा का अंत करने के लिए ग्रामीण कन्या से विषकन्या बनती है। अत्याचारी एवं स्त्री लंपट राजा को विषपान कराकर उसका अंत कराती है। इस प्रकार व अन्यायी एवं अत्याचारी राजा का वध कर संपूर्ण प्रजा को भयमुक्त एवं स्वतंत्र कराती है।

निष्कर्ष रूप से कह सकते है कि हिंदी नाट्य साहित्य में चित्रित स्त्री रूपों में निरंतर बदलाव आता गया है। प्रसाद के नाटक 'ध्रुवस्वामिनी' की ध्रुवस्वामिनी से प्रारंभ नारी का स्वरूप 'आधे - अधूरे' के सावित्री से होकर 'सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक' से होते हुए विषवंश तक काफी परिवर्तित हुआ है। इसका अर्थ यह भी नहीं है कि, निरंतर विकसित होते स्त्री रूपों में पारंपरिक रूपों का चित्रण ही नहीं है। कुछ नाटकों में स्त्रियों का पारंपरिक भारतीय रुप भी है। लेकिन प्रमुखत: नारी रूपों को आधुनिक, विद्रोही एवं स्वछंद रूपों में ही चित्रित किया है। इसमें मुख विद्रोह करने वाली 'माधवी' नाटक की माधवी, 'कोमल गांधार' की गांधारी, 'सुनो शेफाली' की शेफाली है। तो प्रखर विद्रोह करके परंपरा एवं पुरुष सत्ता को पूर्णत: नकारनेवाली 'सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक' की शीलवती, 'देवयानी का कहना है' की देवयानी, 'एक अजनबी' की शानी, 'चार यारों की यार' की बिंदिया जैसी उन्मुखख स्त्री रूपों का भी चित्रण है। इनके अतिरिक्त समाजस्वास्थ्य के लिए आवश्यक सजग, स्वतंत्र एवं मानवतावादी सोच रखने वाले स्त्री रूपों का चित्रण भी हिंदी नाटक साहित्य में हुआ है। 'ख्याल भारमली' की भारमली, 'विषवंश' की रंदा, 'न्याय की रात' की कमला, 'गंगा माटी' की गंगा, 'नए हाथ' की शालिनी आदि स्त्री पात्र इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है। समाज हित एवं साहित्य के उद्देश्य की दृष्टि से अंतिम प्रकार की स्त्री चरित्र कल्याणकारी है। क्योंकि स्त्री - पुरुष समानता के लिए एक ही नारी पात्र महत्वपूर्ण है। जो अपने ऊपर हो रहे अन्याय का विरोध करे पर मानवता के आधार पर। तभी तो संपूर्ण व्यवस्था सुचारु रूप से चल सकेगी और समाज उन्नति की ओर अग्रसर रहेगा।

संदर्भ सूची:

१. रंगकर्म और मीडिया जयदेव तनेजा पृ.क्र.६९
२. रंगकर्म और मीडिया - जयदेव तनेजा पृ.क्र. ७१
३. दरिंदे - हमीदुल्ला पृ. क्र. ३४
४. देवयानी का कहना है - रमेश बक्षी पृ. क्र. २६
५. चार यारों की यार - सुशील कुमार सिंह पृ.क्र. ७५
६. रंगकर्म और मीडिया जयदेव तनेजा पृ.क्र. ७२
७. युगे - युगे क्रांति - विष्णु प्रभाकरर पृ.क्र. ५८
८. हिंदी नाटक: आज तक विणा गौतम पृ. क्र. ३२७
९. नए हाथ - विनोद रस्तोगी पृ. क्र. ५१
१०. नींद आने तक - नरेंद्र कोहली पृ. क्र. २७
११. मौजूदा हालात को देखते हुए - मृणाल पांडे पृ. क्र. ४४ - ४५
१२. नर - नारी - नाग बोडस पृ. क्र. ६३

❑❑❑